Dated - 19/08/2020

B.A Part - 1 (H & Subsi) Philosophy

डा० अनीता कुमारी गुप्ता
जे० के० कॉलेज बिरौल।

शंकर के ब्रह्म संबंधी विचार की व्याख्या करें?

Ans → शंकराचार्य के अनुसार सम्पूर्ण जगत ब्रह्म का विवर्त है। जिस प्रकार साँप रस्सी का विवर्त है ठीक उसी प्रकार विश्व भी ब्रह्म का विवर्त मात्र है। शंकराचार्य का कहना है कि देखने में ऐसा मालूम होता है कि विश्व ब्रह्म का विवर्त है। परन्तु यह केवल प्रतीति मात्र है वास्तविक नहीं। शंकराचार्य के अनुसार, जिस प्रकार एक जादूगर अपनी जादू से स्वयं प्रभावित नहीं होता, उसी प्रकार ब्रह्म भी माया से प्रभावित नहीं होता। त्रिविध सत्ता है (1) प्रतिभासिक (2) व्यावहारिक (3) पारमार्थिक सत्ता। प्रतिभासिक सत्ता के अन्दर शंकराचार्य ने उन विषयों को रखा है, जो स्वप्न अथवा भ्रम में उपस्थित होते हैं। परन्तु, उनका खंडन जाग्रतावस्था के अनुभवों से ही हो जाता है। व्यावहारिक सत्ता के अन्दर वे वस्तुएँ आती हैं जो जाग्रतावस्था में सत्य तो प्रतीत होती हैं पर वे पूर्णतः सत्य नहीं होती। केवल ये व्यावहारिक जीवन को सफल बनाने में सहायक होती हैं। जैसे- जगत, टेबुल, कुर्सी आदि। शंकराचार्य के अनुसार तीसरी और अंतिम सत्ता जो पारमार्थिक सत्ता है, वही शुद्ध सत्ता है जो न बाधित होता है और न जिसके बाधित होने की कल्पना ही की जा सकती है। जहाँ शंकर ने विश्व को ब्रह्म का विवर्त कहा है, वहीं ब्रैडले ने विश्व को ब्रह्म का आभास कहा है। उन्होंने ब्रह्म को ही एकमात्र सत्य माना है। ब्रह्म को छोड़कर शेष सभी वस्तुएँ सत्य नहीं है। ब्रह्म दिक् और काल की सीमा से परे है। ब्रह्म पर कार्य-कारण नियम भी लागू नहीं होता।

—x—